THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के संरक्षण में महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा की भूमिका का अध्ययन

डॉ० प्रशान्त कुमार
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
शोभित विश्वविद्यालय गंगोह
सहारनपुर (उ0प्र0)
prashant.kumar@shobhituniversity.ac.in
9639480428

विकास कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
शोभित विश्वविद्यालय गंगोह
सहारनपुर (उ0प्र0)
pvikash1983@gmail.com
9758054560

शोध सारांश:- ***बुनियादी शिक्षा भारतीय संस्कृति और परम्परा को प्रसारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शिक्षा न केवल ज्ञान एवं कौशल बच्चो को प्रदान करती है, बल्कि उन्हें भारतीय मूल्यों, परम्पराओं और संस्कृति से भी परिचित कराती है। इससे उनको समाज में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाता है। यह शिक्षा प्रणाली जो गांधी जी द्वारा प्रस्तावित की गयी थी का उददेश्य बच्चों को केवल पुस्तक ज्ञान तक सीमित न रखकर बल्कि उन्हंे सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाना है। भारतीय संस्कृति और परम्परा देश की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये हमें अपने पूर्वजो से जोडती है, हमारे मूल्यों को दर्शाती है, और हमारी सामाजिक व्यवस्था को आकार देती है। बुनियादी शिक्षा बच्चों को पारम्परिक ज्ञान जैसे कि हस्तकला, कृषि और चिकित्सा से परिचित कराती है। जो भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।***

वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति व अच्छे संस्कारो से हमें दूर ले जा रही है। वर्तमान में आज का विद्यार्थी शिक्षा के साथ-साथ हाथ की दस्तकारी व स्वावलंबन की ओर परिलक्षित हो। महात्मा गांधी के बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त को सर्वागीण विकास की ओर अग्रसर करने का प्रयास भारत ही नही विश्व में भी नई चेतना ला सकता है। गांधीजी ने शिक्षा को बालकों के वास्तविक जीवन से जोडने उन्हे मातृभाषा में शिक्षित करने बच्चों को समाज एवं देश की बुनियादी बातों से परिचित कराने पर बल देते हुए शिक्षा को राष्ट्रीय स्वरूप देने का प्रयास किया है। शिक्षा में मूल्यों के समावेश की बात आज भी प्रासंगिक है। बुनियादी शिक्षा एक प्रकार से सार्वजनिक शिक्षा है। जिसका सम्बन्ध ऐसे बालको का निर्माण करना है जिनमें सामाजिक कुशलता तो विकसित हो ही पर साथ-साथ शिक्षा रोजगारोन्मुखी हो इसके लिए विद्यालय में ऐसे पाठ्यक्रम का प्रावधान हो जो व्यक्ति को स्वावलम्बी बना सके।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

गांधीजी आत्मनिर्भरता और स्वायतता को ज्यादा महत्व देते थे तथा स्कूलों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे ताकि व राजनितिक रूप से स्वतंत्र हो गांधीजी की बुनियादी शिक्षा वास्तव में उनके आदर्श समाज की छवि को साकार करती है। जो कि छोटे आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदायों से बना है और देश के नागरिक भी आत्म सम्मान एवं उदारता के गुणों से परिपूर्ण है। बुनियादी शिक्षा उद्योग की शिक्षा ना होकर उद्योग द्वारा शिक्षा होती है जिसका पाठयक्रम बालकों की रूचि योग्यता एवं आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर बनाया गया है। बालक को प्रधानता देने के कारण इसे बाल केंद्रित शिक्षा की संज्ञा भी दी जाती है। बुनियादी शिक्षा सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधार की दृष्टि से भी उपयुक्त है। क्योकि इससे समाज में बेकारी, बेरोजगारी की समस्या दूर होती है तथा सामाजिक उन्नति की और समाज अग्रसर होता है साथ ही बालक संस्कृति को सहेजने मे भी अपना योगदान देता है।

प्रस्तावना- प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में साहित्य, व्याकरण, धर्म, दर्शन, तर्कशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, नक्षत्र विज्ञान, औषध विज्ञान, शल्य चिकित्सा, लेखाविधि, व्यापार, कृषि, संगीत, नृत्य तथा चित्रकला आदि की शिक्षा प्रदान की जाती थी। इस शिक्षा का उद्देश्य था भौतिक, शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पूर्ण राष्ट्र को सुदृढ रखना था। इस मूल्य आधारित शिक्षा व्यवस्था में बौद्धिक वातावरण में स्त्री पुरूष समानता, कर्म करने की स्वतंत्रता, पूजा-अर्चना की उदार बहुलतावादी संस्कृति आदि की अवधारणा भारतीय समाज में व्यापक रूप से उपलब्ध थी। किन्तु मैकाले ने भारत में शिक्षातंत्र को अपने लक्ष्य के अनुरूप ऐसा ढाला कि शीघ्र ही अनेक भारतीय मूल्यों, संस्कृति, परम्पराओं और आदर्शो को हीन समझने लगे। प्रगतिवाद और तथाकथित वैज्ञानिक चिंतन ने बहुत कुछ प्राचीन भारतीय मूल्यों को ध्वस्त करने का कार्य किया और शिक्षा धनोपार्जन का साधन बन गयी। चूँकि सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका सकारात्मक एवं महत्वपूर्ण रही है। अतः शिक्षा प्रणाली में आवश्यक मूल्यों को समाहित करना आवश्यक है। गांधीजी की बुनियादी तालीम नैतिकता के विकास को शिक्षा के सर्वप्रथम कार्य के रूप में मानती है। उसके अनुसार सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानव प्रयास है। अपने क्रियाकलापों मे केवल नैतिकता ही जीवन को सुन्दरता तथा प्रतिष्ठा प्रदान कर सकती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

आधुनिक युग में देश के समग्र विकास हेतु नैतिकता मूल्यों को पुष्ट करके आदर्श समाज का निर्माण करने वाली शिक्षा हेतु शैक्षिक नीति एवं पाठ्य सामग्री शिक्षण विधि एवं प्रक्रिया, अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तथा शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशासन जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षा संस्थानो का उद्देश्य मानव का बहुमुखी विकास (बौद्धिक, भौतिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक) करना होना चाहिए।

सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली की समीक्षा कर नये सिरे से आज की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के आधार पर शिक्षा प्रणाली का निर्माण किया जाना चाहिए। शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिससे चरित्र बल बढे, मानसिक बल बढे तथा मनुष्य स्वालम्बी बन सके। आज की शिक्षा पद्धति केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करती है। अतः वर्तमान समय में आवश्यकता है मूल्य आधारित व्यवहारिक शिक्षा पद्धति की।

शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों का समावेश हर स्तर पर करना होगा जिससे मन में सृजनात्मक व स्वच्छ विचार ही स्थायी रूप से अपना घर बना सके तथा भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के आरक्षण में शिक्षा वयवस्था अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

बुनियादी शिक्षा का एक अहम पहलु है कार्य के माध्यम से शिक्षा किसी कार्य के बारे में बता भर देना बुनियादी शिक्षा नही है। बुनियादी शिक्षा तब होगी जब उस काम को बच्चे खुद करें और काम के माध्यम से ज्ञान अर्जित करें। बुनियादी शिक्षा स्कूल के चहारदीवारी में पाठ्य पुस्तकीय शिक्षा को खारिज करती है।बुनियादी शिक्षा जीवन की शिक्षा है। इसलिए इसका पाठ्यक्रम काफी सोच समझकर बनाया गया है।जब हम बेहतर शिक्षा की बात करतें है तो हमें इसका जवाब बुनियादी शिक्षा में ही मिलता है। बच्चों को जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक बनाने के प्रति बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम काफी गंभीर है।

आज के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा को लागू करना ही तो विषय वस्तु का चुनाव हम स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कर सकतें है। दरअसल विषयवस्तु

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है। विषयवस्तु वह हिस्सा है। जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम के बाकी उद्देश्यों को हासिल किया जा सकता है। इस नजरिए से देखे तो बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम एक समृद्ध शिक्षा प्रक्रिया का द्योतक है। बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम का आग्रह है कि बच्चों में योग्यताओं का विकास हो सके स्कूली स्तर पर बच्चों को लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर कैसे उपलब्ध कराये जाए। यह शिक्षा का अहम हिस्सा है। काफी बच्चों में एक संकोच होता है। कई बार बच्चों में यह डर होता है कि वे कुछ बोलेगे या करेंगे तो लोग हंसेगे। किन्तु बच्चों को प्रोत्साहित करते रहने पर वे आगे आते है।

यदि हम बेहतर शिक्षा की बात करते है तो आज भी बुनियादी तालीम में ही इसका अर्थ छिपा हुआ है। दरअसल गांधीजी की शिक्षा योजना का विचार लगातार विकसित होने वाला विचार है। यदि हम शिक्षा नीतियों पर नजर डाले तो गांधी के विचारों को उन नीतियों में हमेशा याद किया जाता रहा है।

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा में जिन तत्वों का समावेश किया था वे आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने पूर्व में थे।

काम केन्द्रित शिक्षा की स्थापना काम ऐसा जो उत्पादन से जुडा हो सृजनात्मकता का विकास करे। काम के माध्यम से ज्ञान का सृजन हो।

शिक्षा मातृभाषा में हो।

शिक्षा अपने परिवेश से जुडे। शिक्षा में समाज की भागीदारी हो।

आकलन प्रतिस्पर्धा रहित हो।

चाहे कोठारी आयोग की बात करें या राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति की इनमें उपरोक्त बातों का समावेश किया जाता रहा है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

विडंम्बना की बात यह है कि काम के माध्यम से ज्ञान के सृजन को दरकिनार करके पाठ्य पुस्तकीय अध्याय तैयार कर उनको कक्षा की चहारदीवारी में पढाया जाता है। काम के शिक्षा शास्त्रीय पहलुओं पर अब तक काफी शोध हो चुके है और दुनिया भर के शिक्षा से जुडे हुए लोग इस बात को स्वीकार करते है कि जिंदगी से जुडे हुए कामांे को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए। बच्चों मे हाथ, दिमाग और दिल का तालमेल बिठाने के लिए काम बेहद जरूरी है। हमने अपने परिवेश से, समाज से शिक्षा को जोडने के बजाए उससे जुदा कर दिया।

इस प्रकार के काफी अध्ययन हुए हैं कि बच्चांे को जब अपने परिवेश से जोडकर शिक्षा दी जाती है तो वे बेहतरी से सीखते हैं। मातृभाषा में शिक्षा का अर्थ यह नही है कि बाकी भाषाओं का विरोध करें। इसका अर्थ है कि प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया तथा विनम्रता, सच्चाई, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सम्मान जैसे मूल्यांे पर बल दिया। भारत में शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य और जीवन में सहायक है। इस प्रकार ध्यातव्य है कि एन0ई0पी0 2020 ने केवल प्राचीन भारत के विद्धानों जैसे चरक, सुश्रुत, आर्यभट, वराहमिहिर, मैत्रेयी, मार्गी आदि के विचारों एवं कार्यो को वर्तमान पाठयक्रम मे प्री-स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शामिल करने की और भी हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है।

यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परम्परा को लिए बिना नही चल सकती है। क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर मे सरपट भागे जा रहे है वही हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान, विज्ञान परम्परा को भूलते जा रहे है। इस अंधानुकरण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकेगा।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

हमारी शिक्षा व्यवस्था में भारतीय मूल्यों और ज्ञान की स्पष्ट झलक दिखाई दे सके इसी उपक्रम में बुनियादी शिक्षा विभिन्न माध्यमों से भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के संरक्षण पर बल देती है।देश के भविष्य का निर्माण करने वाली भावी पीढी के लिए ये नैतिक मूल्य बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना देश के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे देश की पहचान बनती है।बुनियादी शिक्षा भारतीय ज्ञान परम्परा को एक गत्यात्मक तथा व्यापक जीवन प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करते हुए भारत की गौरवशाली संस्कृति और परम्परा को स्थापित करने का प्रयास करती है।

भारतीय परम्पराए धर्म और संस्कृति को जोडने का एक अदभुत माध्यम है। वे जीवन को आध्यात्मिक और व्यवहारिक दोनो रूपों में समृद्ध करती है। इन परम्पराओं के माध्यम से न केवल भारतीय समाज में एकता और सह - अस्तित्व को बढावा मिलता है। बल्कि ये वैशिवक स्तर पर भारतीयता का प्रतीक भी बनती है। भारत अपनी विविधतापूर्ण संस्कृति और समृद्ध परम्पराओं के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ धर्म और संस्कृति का गहरा सम्बंध है जो लोगो के जीवन, आचार-विचार और जीवन शैली को प्रभावित करता है। भारतीय परम्पराए न केवल धर्म को महत्व देती है। बल्कि समाज मे एकता सदभाव और नैतिक मूल्यों को भी स्थापित करती है।

हालांकि बुनियादी शिक्षा में धार्मिक शिक्षा को कोई स्थान नही दिया गया है। लेकिन यह शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता व संस्कृति के नजदीक है। साथ ही साथ सामुदायिक जीवन की आधारभूत व्यवस्थाओं से जुडी हुई है। गांधी जी ने धर्म की शिक्षा का बहिष्कार किया क्योंकि उन्हे भय था कि यदि धर्मो की शिक्षा दी जाती है। या पालन किया जाता है। ई0मेल के स्थान पर झगडे उत्पन्न करते है। वर्तमान स्थिति भी इस बात की समर्थक है।

गांधीजी ने वर्गहीन, शोषनविहीन, और सर्वोदयी समाज की स्थापना के लिए शिक्षा को आवश्यक बताया जो वर्तमान मे भी प्रासंगिक है।आज समाज में शोषण, घृणा एवं स्वार्थ

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

सिद्धि जैसी कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है ऐसे में गांधीजी के शिक्षा सम्बंधी विचार प्रकाश स्तम्भ है।

अध्ययन विधिः- प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसंधान की व्याख्यात्मक विधि का प्रयोग किया है।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकनः-

दधीच, सुनैयना (2024)- "बुनियादी शिक्षा के विशेष सन्दर्भ में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" इस शोधपत्र के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि बुनियादी शिक्षा गृह, स्कूल और समाज के जीवन में पूर्ण सामजस्य स्थापित करती है। बालक का स्वाभाविक विकास किसी कार्य में संलग्न होकर ही हो सकता है इस तथ्य को ध्यान में रखकर बुनियादी शिक्षा बालक में शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान की भावना का निर्माण करती है। जिससे वह शारीरिक श्रम को महत्व देने लगता है।

रंजन देव, डा0 प्रत्युश (2021)- "महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन और इसके वर्तमान निहितार्थ" इस शोधपत्र में बताया गया कि बुनियादी शिक्षा एक व्यापक दृष्टिकोण है जो बच्चांे के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित है। इसका उद्देश्य बच्चों को केवल ज्ञान देना नही है बल्कि उन्हंे एक जिम्मेदार, आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से जागरूक व्यक्ति बनाना है। बुनियादी शिक्षा का आधार सामाजिक है। क्योंकि इसमें बालक में अनेक सामाजिक गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। बालक में हस्तशिल्प के माध्यम से सेवा और स्नेह, सहयोग और सहिष्णुता, आत्म-संयम तथा आत्म-विश्वास के गुणों को सुविकसित करने का पूरा-पूरा प्रयत्न किया जाता है। बुनियादी शिक्षा में दस्तकारी द्वारा शिक्षा को प्रधानता दी गयी है और विविध विषयों के ज्ञान की रचना भी इसी मूल-उधोग के इर्द-गिर्द की गयी है। दस्तकारी को ज्ञान का वाहन अथवा साधन बनाया गया है।

कुमारी, डा0 सोनी (2020) "बुनियादी शिक्षा और गांधीजी के विचार" - इस शोध पत्र के अध्ययन से पता चला कि गांधीजी ने बहुत वर्ष पहले की बेरोजगारी की समस्या की ओर

संकेत करके बुनियादी शिक्षा के अन्तर्गत उद्योग पर आधारित शिक्षा पर बल देते हुए कहा था कि बालक किसी न किसी हस्त-शिल्प को सीखकर आत्मनिर्भर बने तथा बेरोजगारी से मुक्ति पाये। गांधीजी की बातों को याद करके वर्तमान में व्यावहारिक शिक्षा तथा व्यवसायिक शिक्षा प्रकृति पर अधिक बल दिया जा रहा है। उन्हांने सर्वगुणसम्पन्न एवं दोष रहित समाज निर्माण की कल्पना की थी जो इस शिक्षा के बिना अधूरी है। बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को न केवल ज्ञान देता हैं बल्कि उन्हें जीवनयापन के लिए आवश्यक कौशल भी सिखाता है, जिससे वे स्वावलम्बी बन सके।

यादव, डा0 बीना (2017)- "गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की प्रासंगिकता वर्तमान परिप्रश्य में" - इस शोध पत्र के अध्ययन से हमें ये जानकारी मिलती है कि बुनियादी तालीम सामाजिक सामजस्य को बढावा देती है और व्यक्तियों को समाज के सक्रिय और जिम्मेदार सदस्य बनाती है। शिक्षा के माध्यम से छात्रो में प्रेम, अहिंसा और सहयोग की भावना का विकास किया जाता है। जो एक आदर्श सहकारी लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में सहायक होती है। यह शिक्षा व्यक्तिगत विकास, रोजगार के अवसर, सामाजिक सशक्तिकरण और आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है क्यांेकि इस शिक्षा का आधार भारतीय संस्कृति है। यह बच्चांे को स्थानीय संस्कृति और वातावरण से जोडती है। इसलिए इसमें मातृभाषा को अधिक महत्व दिया जाता है।

कुमार, सुनील (2014)- "आधुनिक भारतीय समाज में बुनियादी शिक्षा की उपादेयता एवं निष्कर्ष" - प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि बुनियादी शिक्षा मे ज्ञान को एक अभिन्न और अखण्ड इकाई माना जाता है। शिक्षा के सब विषयों को अलग-अलग विभाजित नही किया जाता है और न उनका ज्ञान ही अलग-अलग दिया जाता है। इसके विपरीत सब विषयों का ज्ञान किसी उपयोगी शिल्प के द्वारा परस्पर सम्बंधित करके दिया जाता है। आधुनिक युग के सभी शिक्षार्थीयों द्वारा इस बात को स्वीकार किया जाता है, कि बालक की शिक्षा का माध्यम कोई उत्पादक कार्य होना चाहिए। उनका मत है कि केवल इसी प्रकार की शिक्षा बालक का वास्तविक जीवन से सम्बंध स्थापित कर सकती है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

निष्कर्ष:- यदि गांधी जी के शिक्षा-दर्शन का विश्लेषण करे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के बेहतर विकल्प के लिए आज बुनियादी शिक्षा को देखा जा रहा है। बुनियादी शिक्षा क्या है। वर्तमान समय मे इसे किन परिवर्तनो के साथ अपनाया जाना चाहिए। कुछ ऐसे बिन्दुओं पर ही हमें अपनी समझ बनानी होगी साथ ही इसे वैश्वीकरण और उदारीकरण के संदर्भ में देखना होगा। इसके अन्तर्गत शिक्षा के सामाजिक सरोकार हाशियाकृत समाज की समस्याएं व उनके सवाल हाशियाकृत बच्चों की शिक्षा के लिए शैक्षिक विचार, नीतियां, कक्षा कक्ष की प्रक्रियाओं, क्रियाकलापों, शिक्षक प्रशिक्षण पर पुर्नविचार आदि को बेहतर बनाने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे।

आज हम सभी अनुभव कर रहे है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है। परन्तु शुरूआत कहां से हो और कौन करे, यह किसी की समझ में नही आ रहा। समाज में शिक्षा के क्षेत्र में इस विकल्पहीनता की स्थिति में बुनियादी शिक्षा ही एक आशा की किरण के रूप में हमें दिखाई देती है।

आज प्रधानमत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा कौशल विकास, आत्मनिर्भर भारत जैसी बाते कही जा रही है जोकि गांधीजी की नई तालीम का ही मुख्य आधार है। वर्तमान परिस्थिति नई तालीम के लिए अनुकूल है। वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रस्तुत किया गया। इसमें भारतीय ज्ञान परम्पराओं को केन्द्र मानते हुए शिक्षा के क्षेत्र अवधारणत्मक समझ, रचनात्मकता एवं तार्किकता, नैतिकता, बहुभाषिकता, जीवन कौशल तथा स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए व्यापक परिवर्तन करने के सुझाओं को प्रस्तुत किया गया। बुनियादी शिक्षा का शैक्षिक दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप में उल्लेखनीय समानता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस वास्तविकता का पुरजोर समर्थन करती है कि हमें बालक में नैतिक, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे सहानुभूति दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना आदि सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता और न्याय मूल्यों का

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–2, Issues– 4 October- December: 2025

विकास करना है। बुनियादी शिक्षा भी इन सभी मूल्यों को बालको में विकसित करने पर बल देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्ता, डा0 एस0पी0 एवं गुप्ता डा0 अलका (2022) - "भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याऐं" शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- पाराशर, डा0 मधु एवं सिंह, दीपा (2021) - "भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास" एसबीपीडी प्रकाशन हाउस, आगरा।
- जोशी, शम्भू मिथिलेश (2020) -"गांधी दृष्टि के विविध आयाम" राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।
- https://dspmuranchi.ac.in
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) - "मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार" नई दिल्ली।
- पान्डे, डा॰0 आ॰म प्रकाश (2016) - "महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा" भारती प्रकाशन, वाराणसी।
- उपाध्याय, ए एवं बरूह, एन के (2014) - "गांधीयन फिलोसोफिकल था॰ट एन्ड इट्स आ॰न प्रजेन्ट एजुकेशन सिस्टम आ॰फ इण्डिया" डिबरूगढ यूनिवर्सिटी, आसाम।
- https://www.ijcrt.org
- पाठ्क, आर पी (2012) - "डवलपमैन्ट एन्ड प्राब्लम आ॰फ इण्डियन एजुकेशन" पियर्सन एजुकेशन इण्डिया, नई दिल्ली।
- डा0 शिवदत्त (2012)-"बुनियादी शिक्षा की अवधारणा" राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- कुमार, वी (2007)- "गांधी द मैन हिज लाईफ एण्ड विजन" रिगल पब्लीकेशन, नई दिल्ली।
- बजाज, डा0 जे0के0 (2000) - "रेलेवन्स आफ महात्मा गांधी एंड हिज थाट इन मा॰डर्न टाईम्स" सेन्टर फार पालिसी स्टडीज, चेन्नई।
- https://bise.edu.in